तो श्रीकृष्ण ने बांसुरी बजायी, और गोपियाँ भागी। सबने वर्तमान काम को अचानक छोड़ दिया और कृष्ण प्रेम की समाधि में चल पड़ी। उनके पतियों ने पाया कि उनकी पत्नियां गहरी नींद में उन्ही के बगल में सो रही थी। बांसुरी भी दिव्य थी। इसकी धुन केवल उन लोगों द्वारा सुनाई गई जो दिव्य रास के अधिकारी थे। बाकी पुरुष, बच्चे, यशोदा मैया आदि ने बांसुरी सुनी ही नही।

लेकिन वही धुन हिमालय पर्वत तक पहुंच गई। वृंदावन से सैकड़ों मील दूर, जहां भगवान शंकर समाधी में लीन थे। रास का रस वो भला कैसे छोडते? वो भी मौके पर पहुंचे गये। रास के स्थान पर पहुंचने पर, उन्हे रोका गया।
एक गोपी ने प उनसे पूछाूछा, 'तुम कौन हो?'
'मैं शंकर हूं।' शंकर जी ने जवाब दिया।
'कौन से शंकर?'

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 94232 09132

'मतलब'
'हाँ! अनंत ब्रह्मांड है और प्रत्येक ब्रह्मांड में एक ब्रह्मा, एक विष्णु और एक शंकर हैं। आप कहाँ से हैं?'
'ओ! मैं चार मुख वाले ब्रह्मा के ब्रह्मांड से हूं।'
'लेकिन इस नृत्य पार्टी में केवल महिलाओं को अनुमति है। '
अब श्याम रस तो पाना है। चाहे जैसे मिले! शंकरजी ने खुद को एक नारी में बदल दिया और अंदर चले गये। पार्वती पहले से ही वहां मौजूद थी। वह अपने पति को नारी रूप में देखकर मुस्कुरा दी कि बडे पुरूष बनते थे। आज स्त्री बनना पडा।

शंकरजी वैष्णवों में टॉप करते है। जब रामावतार हुआ था तो शंकरजी ने हनुमान जी रूप में अवतार लिया था और श्रीराम के भक्तों में उनकी तुलना में कोई नही था। जब कृष्णावतार हुआ तब भी श्रीकृष्ण के बाल रूप के दर्शन के गोकुल गये। लेकिन यशोदा मैया ने उनका वेष देखकर कहा - मैं लाला को बाहर नही लाउंगी, तुम्हारा भयानक भेष देखकर मेरा लाला डर जायेगा। तब शंकरजी ने यमुना के किनारे जाकर रोना शुरू किया तो इधर

लाला भी जोर से रोने लगा। मैया को किसी ने कहा - लगता वो जोगी कुछ टोना कर गया है, अब वही लाला का रोना बंद कर सकता है। तब मैया ने शंकरजी को ढूंढ कर ले आयी। जब नजर से नजर मिली तब लाला का रोना बंद हुआ।

शंकरजी गोपी तनु धारण कर ब्रज में श्रीकृष्ण के दर्शन के लिए अक्सर जाया करते थे। और महारास में तो पहुँच ही गये।